भारत का एक सुप्रसिद्ध हिन्दी कृषि समाचार-पत्र (न्यूज़ पेपर)

खेती दुनिया

www.khetiduniyan.in

Excellence in Agri Info

KHETI DUNIYAN, PATIALA

All Subject to Patiala Jurisdiction.

BOOK POST – PRINTED MATTER

KHETI DUNIYAN

• Issue Dated 18-01-2025• Vol.9 No.03 • H.O. : KD Complex, Gaushala Road, Patiala-147001 (Pb.) Ph. : 0175-2214575 • Page : 08 E-mail : khetiduniyan1983@gmail.com

हरियाणा में 125 लाख टन गेहूं का अनुमान, ये पिछले साल से 1 लाख टन ज्यादा

हरियाणा में गेहूं की फसल इस बार अब तक 61 लाख 60 हज़ार एकड़ में बोई जा चुकी है, जो पिछले साल से 2 लाख 17 हज़ार 500 एकड़ ज्यादा है। अब तक फसल में फुटाव व बढ़वार भी अच्छी है। इसे देखते हुए कृषि वैज्ञानिकों ने प्रदेश में गेहूं उत्पादन 125 लाख टन होने का अनुमान लगाया है। यह पिछले साल हुए 124 लाख टन उत्पादन से एक लाख टन ज्यादा है। करनाल स्थित गेहूं एवं जौ अनुसंधान केन्द्र के निदेशक डॉ. रत्न तिवारी के अनुसार, अब तक देशभर में फसल बहुत अच्छी है। जिस तरह से फसल की बढ़वार हुई है, इससे उत्पादन भी बंपर होने की संभावना है। पिछले साल देश में 11.32 करोड़ टन उत्पादन हुआ था। इस बार 11.5 करोड़ टन उत्पादन का लक्ष्य है। इस बार गेहूं का रकबा 8 करोड़ एकड़ से ज्यादा रहने की संभावना है। पिछले साल यह 7 करोड़ 95 लाख एकड़ था। बता दें कि हरियाणा केन्द्रीय पूल में हर साल 14 प्रतिशत गेहूं का योगदान देता है। इस बार प्रदेश में 83 लाख 87 हज़ार एकड़ में रबी फसलों की बुवाई का लक्ष्य है। 95.80 प्रतिशत लक्ष्य हासिल किया जा चुका है। अब तक 80 लाख 35 हज़ार एकड़ में रबी की विभिन्न फसलें बोई गई हैं।

हल्दी का उत्पादन 5 साल में दोगुना कर 20 लाख टन करने का लक्ष्य

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि निर्यात को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय हल्दी बोर्ड अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नए बाज़ार विकसित करने तथा अगले 5 वर्ष में उत्पादन दोगुना कर करीब 20 लाख टन करने में मदद करेगा।

बोर्ड का उद्घाटन करते हुए उन्होंने कहा कि यह नए उत्पादों और मूल्यवर्धित हल्दी उत्पादों के लिए देश के पारम्परिक ज्ञान पर अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा देगा। मंत्री ने पत्रकारों से कहा कि, "हल्दी को सुनहरा मसाला भी कहा जाता है। वैश्विक हल्दी उत्पादन में भारत की हिस्सेदारी 70 प्रतिशत है। इस 5 साल में उत्पादन दोगुना कर 20 लाख टन करने की योजना बना रहे हैं।"

सरकार ने अक्तूबर में राष्ट्रीय हल्दी बोर्ड के गठन की अधिसूचना जारी की। यह देश में हल्दी तथा हल्दी उत्पादों के विकास व वृद्धि पर ध्यान केन्द्रित करेगा। पल्ले गंगा रैड्डी को बोर्ड का पहला चेयरपर्सन नामित किया गया है। इसका मुख्यालय निजामाबाद (तेलंगाना) में स्थापित किया गया है। भारत दुनिया में हल्दी का सबसे बड़ा उत्पादक उपभोक्ता और निर्यातक है।

करनाल में भारतीय गेहूं एवं जौं अनुसंधान के डायरैक्टर डॉ. रत्न तिवारी बृहस्पतिवार को गेहूं की फसल का निरीक्षण करते हुए।

मौसम गेहूं के अनुकूल

रिकॉर्ड तोड़ उत्पादन की संभावना

मौसम गेहूं की फसल के अनुकूल चल रहा है, जिसके चलते वैज्ञानिक मान रहे हैं कि इस बार रिकॉर्ड तोड़ उत्पादन होने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। पिछले साल जहां भारत सरकार ने 113.9 मिलियन टन का लक्ष्य निर्धारित किया था, वे इस बार 115 मिलियन टन निर्धारित किया है। इस वर्ष गेहूं का रकबा पिछले साल की अपेक्षा बढ़ा है, अगर इस साल गेहूं की बुवाई की बात करें, तो देश में 320 लाख हैक्टेयर में गेहूं की फसल लगाई गई है।

भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान करनाल के डायरैक्टर डॉ. रत्न तिवारी ने बताया कि इस समय रुक-रुक कर बरसात हो रही है, जो फसल के लिए बहुत अच्छी है। इससे फसल पानी सोख लेती है और नमी बनी रहती है। वहीं, रात के समय अधिक ठंड पड़ रही है, साथ ही दिन में धूप खिलती है, जो गेहूं का पसंदीदा मौसम है। अगर इसी तरह का मौसम बना रहा तो गेहूं की फसल बंपर होगी।

उन्होंने किसान भाईयों से अपील करते हुए कहा कि जिन किसानों ने पुरानी प्रजातियां लगाई हुई हैं, वे फसल पर लगातार निगरानी रखें, क्योंकि उनमें बीमारी आने की संभावना बनी रहती है। जिन किसानों ने संस्थान द्वारा विकसित की गई गेहूं की प्रजातियां लगाई हैं, वे रोग प्रतिरोधी होती हैं, साथ ही मौसम के उतार-चढ़ाव को सहने की क्षमता वाली होती हैं। इसके अलावा किसान भाई फसल को देखते रहें कि फसल में पीलापन तो नहीं आ रहा, अगर पीलापन हो तो देखें कि ये पीला रतुआ तो नहीं है।

देश में गेहूं की बुवाई का रकबा बढ़ कर 320 लाख हैक्टेयर हुआ

केन्द्रीय कृषि मंत्रालय ने बताया कि देश में रबी फसल की बुवाई 632 लाख हैक्टेयर से अधिक हुई, जबकि पिछले वर्ष यह इस अवधि के दौरान 631.44 लाख हैक्टेयर में हुई थी। मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक चालू रबी सीज़न के दौरान गेहूं का बुवाई का रकबा 320 लाख हैक्टेयर हो गया है, जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि के दौरान 315.63 लाख हैक्टेयर बुवाई हुई थी।

14 जनवरी तक दलहन का रकबा 139.81 लाख हैक्टेयर हो गया है, जबकि श्रीअन्न और मोटे अनाज की बुवाई 53.55 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में की गई। रैपसीड सरसों तिलहन खेती का रकबा 88.50 लाख हैक्टेयर है। मूंगफली तिलहन खेती का रकबा बढ़ कर 3.65 लाख हैक्टेयर हो गया है। मंत्रालय द्वारा जारी आंकड़ों के मुताबिक अब तिलहन का रकबा 96.82 लाख हैक्टेयर रह गया है, जबकि पिछले वर्ष इस अवधि के दौरान 101.88 लाख हैक्टेयर में बोया गया था।

पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना द्वारा
मार्च 2025 में लगाए जा रहे

किसान मेले

पी.ए.यू. कैंपस, लुधियाना में
दो दिवसीय किसान मेला 21 व 22 मार्च

खेती दुनिया द्वारा इन मेलों पर स्टाल लगाए जाएंगे और नई मैंबरशिप हेतु बुकिंग की जाएगी।

- नाग कलां जहांगीर (अमृतसर) 5 मार्च
- बल्लोवाल सौंखड़ी (शहीद भगत सिंह नगर) 7 मार्च
- फरीदकोट 11 मार्च
- गुरदासपुर 13 मार्च
- बठिण्डा 18 मार्च
- रौणी (पटियाला) 25 मार्च

तीन दिवसीय पूसा कृषि विज्ञान किसान मेला, दिल्ली में 24 से 26 फरवरी तक

राजदीप सिंह ने कोकरी फूला सिंह वाला गांव में 6 लाख से किया शुरूआती निवेश

सही दृष्टिकोण, मेहनत और नवाचार से मिली सफलता

मोगा ज़िले के भिंडर कलां गांव के 31 वर्षीय उद्यमी किसान राजदीप सिंह ने सही दृष्टिकोण, मेहनत और नवाचार से सफलता के नए आयाम स्थापित किए। उन्होंने पारम्परिक खेती से आगे बढ़ कर गुड़ की प्रोसैसिंग कर अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई। जब उनके साथी विदेश जाने के सपने देख रहे थे, तब इन्होंने अपने गांव में रह कर कृषि में संभावनाएं देखीं और उच्च गुणवत्ता वाले, रसायन मुक्त खाद्य पदार्थों की मांग को समझा।

6 लाख रुपए के शुरूआती निवेश के साथ राजदीप ने मोगा-लुधियाना हाईवे पर कोकरी फूला सिंह वाला गांव में गुड़ के कारोबार की शुरूआत की। 2023 में पी.ए.यू. और कृषि विज्ञान केन्द्र (के.वी.के.), मोगा के वैज्ञानियों की सलाह पर उन्होंने गुड़ और शक्कर का उत्पादन शुरू किया, जो पूरी तरह सफल रहा। उन्होंने मशीनरी, बर्तन और उत्पादन से संबंधित जानकारी के लिए समय-समय पर इनके विशेषज्ञों से परामर्श लिया।

मोगा ज़िले के डिप्टी कमिश्नर विशेष सारंगल ने राजदीप सिंह की लगन की सराहना करते हुए अन्य किसानों को भी मेहनत और नवाचार से कुछ नया करने के लिए प्रेरित किया। उनकी सफलता ने कई युवा किसानों को कृषि में मूल्य संवर्धित उत्पाद बनाने और उद्यमिता के बारे में सोचने के लिए प्रेरित किया।

गन्ने के रस से गंदगी की सफाई के लिए इस्तेमाल करते हैं भिंडी का पानी

एम.एस.एम.ई. यूनिट में बनाते हैं कई तरह का गुड़ और बेकरी उत्पाद : *राजदीप गन्ने के रस की सफाई के लिए भिंडी के पानी का उपयोग करते हैं। वह गुड़ की भेलियां ही नहीं बनाते, बल्कि ग्राहक की मांग के अनुसार गुड़ की बर्फी, ड्राई फ्रूट गुड़, चीनी, गुड़ चना और अन्य कई प्रकार के उत्पाद तैयार करते हैं। हाईवे के पास अपनी यूनिट की उपयुक्त लोकेशन और गुड़ की महक के कारण उन्हें पहले साल में ही अच्छी सफलता मिली। गन्ने के रस की गुणवत्ता को पी.एच. और टी.एस.एस. के आधार पर जांचा जाता है। जो गुड़ की गुणवत्ता और भंडारण के लिए आवश्यक है। उनकी यूनिट केन्द्र सरकार की एम.एस.एम.ई. योजना के तहत पंजीकृत है। इसका नाम गोल्डन ऑरा रखा है। इसके अलावा वह बेकरी का काम भी करते हैं। मोगा के.वी.के. के रमनदीप कौर और अमनदीप सिंह बराड़ के अनुसार, राजदीप ने बेकरी में चीनी के स्थान पर प्राकृतिक मिठास के लिए गुड़ का उपयोग किया और भंडारित किए गए गुड़ से अपने लाभ को दोगुना कर लिया। उन्होंने आटे के बिस्कुट में देसी घी, गेहूं का आटा, दूध और गुड़ शामिल किया। अपने ब्रांड गोल्डन ऑरा को टिकाऊ बनाने के लिए उन्होंने खाद्य सुरक्षा नियमों के तहत एफ.एस.एस.ए.आई. और एम.एस.एम.ई. से आवश्यक प्रमाण-पत्र प्राप्त किए।*

आलू की फसल की मुख्य बीमारियां एवं उनकी रोकथाम

सतीश कुमार मेहता व राकेश कुमार चुघ, पौध रोग विभाग,
कृषि महाविद्यालय, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

1. अगेती अंगमारी (अरली ब्लाइट) :

लक्षण : इसके भूरे धब्बे पत्तों के किनारो पर तथा ऊपरी

तरफ फैले हुये दिखाई देते हैं। कुछ समय बाद ये धब्बे काले भूरे रंग के तथा गोलाकार हो जाते हैं। इनसे कभी-कभी टहनियां अथवा पूरा पौधा सूख कर गिर जाता है।

रोकथाम : फसल के ऊपर ब्लाईटोक्स-50 या जीनेब या मैंकोजेब की 600-800 ग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी मे मिलाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें और इस छिड़काव को 15 दिन के अंतराल पर दोहराएं।

2. पिछेती अंगमारी (लेट ब्लाइट)

लक्षण : इस बीमारी के निशान सबसे पहले पत्तों के ऊपर

काले काले चकत्तों के रूप मे दिखाई देते हैं, जो बाद मे बढ़ जाते हैं और कुछ ही दिनों में पत्ते मर जाते है। इन प्रभावित पत्तों से बदबू आती है व ज़मीन में आलू के कंद भी प्रभावित हो जाते हैं और फसल तैयार होने से पहले ही नष्ट हो जाती है।

रोकथाम : मैंकोजेब (इंडोफिल एम-45) की 600-800 ग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी मे मिलाकर प्रति एकड़ के हिसाब से 4-5 छिड़काव 15 दिन के अंतरकाल पर करें और जब मौसम ठंडा व आर्द्र हो तो यह छिड़काव 7 दिन के अंतरकाल पर करें।

3. काला कोढ़

लक्षण : इस रोग से प्रभावित आलू के कंद पर काली पपड़ी बन जाती है, यह पपड़ी इस रोग के फंफूद होते हैं। ऐसे रोग ग्रसित आलू को यदि बीज के रूप मे प्रयोग किया जाए, तो इससे रोगी आलू ही पैदा होते हैं।

रोकथाम : कोल्ड स्टोर मे आलूओं का संरक्षण करने से पहले उन रोग ग्रसित आलूओं को निकाल दें, जिनमें कोढ़ रोग के काले निशान दिखाई दे रहे हों।

4. चारकोल रोट

लक्षण : आलू के कन्दों की आंखों के चारों ओर काले धब्बे बन जाते हैं, जिससे कंद काला हो जाता है। भंडारण में रखे आलूओं और ज़मीन में बीमारी ग्रस्त रह गए आलूओं से इस बीमारी का प्रकोप बढ़ जाता है। आलू के कंद चारकोल जैसे काले पिंड के रूप मे बदल जाते हैं।

रोकथाम : अधिक गर्मी पड़ने से पहले मध्य मार्च में फसल को खोद लेना चाहिए। बड़े आकार के आलू संरक्षण के लिए प्रयोग नहीं करने चाहिए व शीत भंडारों में ही आलू भंडारण करें। यदि खुदाई करने में देरी हो, तो मिट्टी

को सिंचाई द्वारा ठंडा रखें।

5. स्कैब

लक्षण : कन्दों पर कड़े, गोल कार्क जैसे स्थान दिखाई देते हैं, जो कभी-कभी हल्के या गहरे भूरे रंग के होते हैं। रोग ग्रसित बीज कंद रोग को फैलाने का काम करते हैं।

रोकथाम : शीत भंडारण से पूर्व 30 मिनट तक बोरिक एसिड के 3 प्रतिशत घोल वाला उपचार कोढ़ व स्कैब के लिए अत्यंत प्रभावकारी है।

6. ब्लैक लैग

लक्षण : प्रभावित पौधों का रंग फीका हरा या पीला पड़ने लगता है व पौधे मुरझा कर मर जाते हैं। ज़मीन की सतह पर तने का रंग काला हो जाता है एवं इस रोग से ग्रसित आलू शीत भंडार मे सड़ने लगते हैं।

रोकथाम : जिन पौधों पर रोग के निशान दिखाई दें, उनको कंद सहित निकाल कर नष्ट कर दें व खेत में बार-बार न घुसें।

7. पोटैटो वाइरस 'अक्स' व 'एस' या लटेंट मोजेक

लक्षण : प्रभावित पौधों के पत्ते कुछ मुड़े हुए या उन पर हल्के हरे चकत्ते दिखाई देते हैं। अधिक प्रकोप से पौधे सिकुड़ जाते हैं, परन्तु कभी-कभी इस रोग के निशान दिखाई नहीं देते हैं।

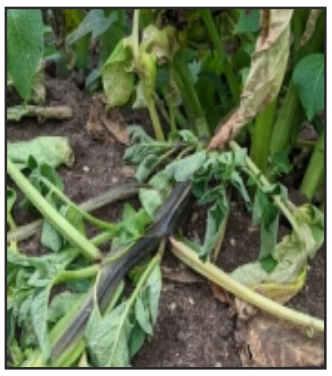

रोकथाम : जिन पौधों पर रोग के निशान दिखाई पड़े उन्हे कंद सहित उखाड़ कर नष्ट कर दें व खेत में बार-बार न घुसें।

8. पोटैटो वाइरस 'वाई' या वैन बैन्डिंग मोजेक

लक्षण : इससे पत्तों की शिराएं मुड़ जाती हैं व पत्तों पर पीले या हरे पीले से चकत्ते पड़ जाते हैं। कंदों की संख्या घट जाती है और यह छोटे रह जाते हैं।

रोकथाम : चेपे की संख्या कम करने के लिए 300 मिलीलीटर रोगोर या मैटासिस्टॉक्स के 10-15 दिनों के अंतरकाल पर 3-4 छिड़काव करें।

9. पत्ती मरोड़ व फ्लोएम नेक्रोसिस

लक्षण : प्रभावित पौधों के पत्ते ऊपर व अंदर की ओर मुड़ने लगते हैं। ये सख्त हो जाने के कारण टूटने पर चटख की आवाज करते हैं। तने व कंद पर रोग के निशान दिखाई देते हैं।

रोकथाम : रोग रहित प्रमाणित बीज ही बोयें। चेपे की संख्या कम करने के लिए 300 मिलीलीटर रोगोर या मैटासिस्टॉक्स के हिसाब से 10-15 दिनों के अंतर पर 3-4 छिड़काव करें।

गोभी सरसों में सल्फर प्रबंधन का महत्व

नेहा चौहान, कृषि विज्ञान केन्द्र, मंडी (हि.प्र.); नागेंद्र बुटेल, कृषि विज्ञान केन्द्र, शिमला (हि.प्र.); गौरव, कृषि विज्ञान केन्द्र, बिलासपुर (हि.प्र.); नवनीत जरयाल, कृषि विज्ञान केन्द्र, हमीरपुर (हि.प्र.); मिनाक्षी, कृषि विज्ञान केन्द्र, ऊना (हि.प्र.); मीरा ठाकुर, कृषि विज्ञान केन्द्र, सोलन (हि.प्र.); सुशील धीमान, कृषि विज्ञान केन्द्र, चम्बा (हि.प्र.) और दीप कुमार, कृषि विज्ञान केन्द्र, कांगड़ा (हि.प्र.)

गोभी-सरसों हिमाचल प्रदेश के किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण तिलहन फसल है, जो क्षेत्र की जलवायु और मिट्टी के लिए उपयुक्त है। सल्फर (गंधक) इस फसल के पोषण में एक आवश्यक तत्व है, क्योंकि यह प्रोटीन, तेल संश्लेषण और पौधों में एंजाइम क्रियाओं के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हिमाचल की पहाड़ी मिट्टियों में सल्फर की कमी अक्सर देखी जाती है, जिससे उपज और गुणवत्ता में कमी हो सकती है। सल्फर प्रबंधन के सही उपाय अपनाने से न केवल गोभी सरसों की पैदावार बढ़ाई जा सकती है, बल्कि इसमें तेल की मात्रा और गुणवत्ता भी बेहतर होती है। इसके अलावा, यह मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने और टिकाऊ खेती को बढ़ावा देने में सहायक होता है।

सही समय पर उचित मात्रा में सल्फर का उपयोग और मिट्टी परीक्षण आधारित प्रबंधन इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम है, जो हिमाचल प्रदेश के किसानों को अधिक उत्पादन और बेहतर आर्थिक लाभ प्राप्त करने में मदद कर सकते हैं। तिलहन फसलों के लिए संतुलित उर्वरक का प्रयोग आवश्यक है, जिसमें नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश, गंधक, ज़िंक व बोरॉन तत्व अति आवश्यक है। तिलहन फसलों के उत्पादन के लिए सल्फर एक अत्यंत आवश्यक पोषक तत्व है। 0.06 प्रतिशत की औसत सांद्रता के साथ यह पृथ्वी की सतह में तेहरवां सबसे प्रचुर मात्रा में पाया जाने वाला तत्व है। यह प्रोटीन, तेल और विटामिन के संश्लेषण के लिए आवश्यक है। कृषि भूमि में कार्बनिक रूप की तुलना में अकार्बनिक सल्फर की सांद्रता कम होती है। सल्फर की कमी से तिलहन फसलों की गुणवत्ता और मात्रा में भी 40 प्रतिशत कमी हो जाती है। सल्फर की कमी बहुत आम होती जा रही है। भारत में 41 प्रतिशत से अधिक मिट्टी में सल्फर की कमी है। सल्फर की कमी से अमीनो एसिड का संचय होता है, जो नाइट्रोजन के अवशोषण और आत्मसात को नियंत्रित करते हैं। कुल गंधक में से, केवल 10 प्रतिशत गंधक ही उपलब्ध रूप में है। ऑर्गेनिक सल्फर पौधों के लिए उपलब्ध का प्रमुख स्त्रोत है। फसलों में गंधक की महत्वपूर्ण सीमा 10 पी.पी.एम. है, जिसके नीचे की मिट्टी में गंधक की कमी बताई गई है।

गत् वर्षों में सन्तुलित उर्वरकों के अन्तर्गत केवल नत्रजन, फास्फोरस एवं पोटाश के उपयोग पर बल दिया गया। सल्फर के उपयोग पर विशेष ध्यान न दिए जाने के कारण मृदा के 40 प्रतिशत नमूनों में गंधक (सल्फर) की कमी पाई गई है। आज उपयोग में आ रहे गंधक रहित उर्वरकों जैसे यूरिया, डी.ए.पी., एन.पी.के. तथा म्यूरेट ऑफ पोटाश के उपयोग से गंधक की कमी निरन्तर बढ़ रही है।

गंधक के कार्य :

* गंधक क्लोरोफिल का अवयव नहीं है, फिर भी यह इसके निर्माण में सहायता करता है तथा पौधे के हरे भाग की अच्छी वृद्धि करता है।
* यह गंधक युक्त एमिनो अम्लों, सिस्टाइन, सिस्टीन तथा मिथियोनीन तथा प्रोटीन संश्लेषण में आवश्यक होता है।
* सरसों के पौधों की विशिष्ट गंध निर्माण को यह प्रभावित करती है। तिलहनी फसलों के पोषण में गंधक का विशेष महत्व है, क्योंकि बीजों में तेल बनने की प्रक्रिया में इस तत्व की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
* सरसों के तेल में गंधक के यौगिक पाए जाते हैं। तिलहनी फसलों में तैलीय पदार्थ की मात्रा में वृद्धि करती है।
* इसके प्रयोग से बीज बनने की क्रियाओं में तेज़ी आती है।

गंधक की कमी मुख्यतः निम्न कारणों से भूमि के अन्दर हो जाती है, जिसकी तरफ कृषकों का ध्यान नहीं जाता :

* भूमि में सन्तुलित उर्वरकों का प्रयोग न करना।
* लगातार विभिन्न फसलों द्वारा गंधक ज़मीन में लेते रहने व सल्फर रहित उर्वरकों का प्रयोग करना।
* ऐसे उर्वरकों का उपयोग,

शेष पृष्ठ 6 पर

उर्वरक	उपलब्ध गंधक (प्रतिशत)	प्रयोग विधि
सिंगल सुपर फास्फेट	12	बुवाई के पूर्व बेसल ड्रेसिंग के रूप में।
पोटाशियम सल्फेट	18	बुवाई के पूर्व बेसल ड्रेसिंग के रूप में।
अमोनियम सल्फेट	24	बुवाई के पूर्व बेसल ड्रेसिंग के रूप में एवं खड़ी फसल में टॉप ड्रेसिंग के रूप में।
जिप्सम (शुद्ध)	18	भूमि की सतह पर उचित नमी की दशा से बुवाई में 3-4 सप्ताह पूर्व प्रयोग करना चाहिए। यह ऊसर भूमि के लिए ज्यादा उपयुक्त है।
पाइराइट	22	भूमि की सतह पर उचित नमी की दशा से बुवाई में 3-4 सप्ताह पूर्व प्रयोग करना चाहिए। यह ऊसर भूमि के लिए ज्यादा उपयुक्त है।
ज़िंक सल्फेट	18	जस्ते की कमी वाली भूमि के लिए उपयुक्त है। इसका प्रयोग बुवाई के 3-4 सप्ताह पूर्व या खड़ी फसल में पर्णीय छिड़काव करें।
बेंटोनाइट	90	भूमि की सतह पर उचित नमी की दशा में बुवाई के समय प्रयोग करना चाहिए।
तात्विक गंधक	95-100	चिकनी मिट्टी (भारी भूमि) तथा जिस भूमि में वायु का संचार अच्छा हो, उस भूमि के लिए विशेष उपयुक्त है। बुवाई के 3-4 सप्ताह पूर्व उचित नमी की दशा में प्रयोग करना चाहिए।

खेती दुनिया

KHETI DUNIYAN

मुख्य कार्यालय

के.डी. कॉम्पलैक्स, गऊशाला रोड, नजदीक शेरे पंजाब मार्केट, पटियाला - 147001 (पंजाब)

फोन : 0175-2214575
मो. 90410-14575
E-mail : khetiduniyan1983@gmail.com

वर्ष : 09 अंक : 03
तिथि : 18-01-2025

सम्पादक
जगप्रीत सिंह

मुख्य शाखाएं

पटियाला
फोन : 0175-2214575
मो. 90410-14575

मुम्बई

दिल्ली

लुधियाना

बण्ठिडा

सम्पादकीय बोर्ड

डॉ. डी.डी. नारंग
डॉ. जे.एस. डाल
डॉ. आर.एम. फुलझेले

कम्पोजिंग
एक्ता कम्प्यूटरज़ पटियाला

Editor, Printer & Publisher **JAGPREET SINGH**
Printed at **Drishti Printers,** Dasmesh Market, Near Sher-e-Punjab Market,Gaushala Road, PATIALA &
Published at Patiala for **Prop. JAGPREET SINGH**

क्लाइमेट चेंज : अमेरिका में हर साल जंगलों में आग भड़कने की 45 हज़ार घटनाएं, हज़ारों एकड़ ज़मीन तबाह

लॉस एंजिलिस की आग ने ग्लोबल वार्मिंग का सच दिखाया

हॉलीवुड के लिए मशहूर लॉस एंजिलिस को इस सप्ताह हुए भीषण अग्निकांड के लिए भी याद किया जाएगा। 7 जनवरी को इलाके में पांच स्थानों पर भड़की जंगल की आग के कारण एक लाख 80 हज़ार लोगों को अपने घर खाली करने पड़े। निर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने विनाश का दोष कैलिफोर्निया के गवर्नर गेविन न्यूसम और राष्ट्रपति जो बाइडेन पर डाला है। उन्होंने अपने सोशल मीडिया एप ट्रुथ सोशल पर हाइड्रेंट्स में पानी न होने का जिक्र किया। लेकिन त्रासदी के पीछे कुछ बड़े कारण हैं। दरअसल, ग्रीन हाउस गैसों ने धरती के पूरे सिस्टम में उलटफेर किया है।

लंबे समय पहले साबित हो चुका है कि जलवायु परिवर्तन से जंगलों में आग भड़कती है, सूखा पड़ता है, हरियाली सूखती है और भीषण तूफान आते हैं। गर्म होती दुनिया बेकाबू अग्निकांडों का बड़ा कारण है। यूरोपियन स्पेस एजेंसी कॉपरनिकस क्लाइमेट चेंज सर्विस ने 10 जनवरी को अपनी रिपोर्ट में इसका खुलासा किया है। रिपोर्ट के अनुसार 2024 पहला साल है, जब दुनिया का तापमान पूर्व इंडस्ट्रियल लेवल से 1.6 डिग्री सैल्सियस अधिक हो गया।

10 जनवरी की रिपोर्ट को जलते लॉस एंजिलिस के संदर्भ में देखने की जरूरत है। अमेरिका में जंगलों की आग से भारी तबाही हो रही है। नेशनल इंटरएजेंसी फायर सैंटर के अनुसार 2024 में सितंबर तक जंगलों में आग की 38 हज़ार से अधिक घटनाएं हो चुकी थीं। 78 लाख एकड़ ज़मीन आग से प्रभावित हुई है। अमेरिका में हर साल जंगलों में आग की 45 हज़ार से अधिक घटनाएं होती हैं।

दुनिया के गर्म होने का अकेला संकेत जंगलों की आग नहीं है। पिछले साल हर जगह वातावरण में नमी, मीथेन गैस, कार्बन डाई ऑक्साइड का स्तर बढ़ने, अंटार्कटिका के आस-पास कम बर्फ, उत्तर अटलांटिक, हिंद महासागर और पश्चिम पैसिफिक समुद्रों में तापमान ज्यादा रिकॉर्ड किए जाने जैसी हलचलें हुई हैं।

कॉर्बन डाई ऑक्साइड और मीथेन बढ़ रही है

2024 में पृथ्वी का तापमान नए स्तर पर पहुंचने के साथ वातावरण में भी बदलाव हुआ है। 2023 की तुलना में हवा में प्रति दस लाख पर कार्बन डाई ऑक्साइड के 2.9 कण अधिक रहे। कार्बन डाई ऑक्साइड वातावरण में पहुंचने पर सैकड़ों सालों तक धरती को गर्म रख सकती है। बहुत अधिक शक्तिशाली ग्रीनहाउस गैस मीथेन के प्रति अरब पर तीन कण अधिक रहे। कॉपरनिकस एटमॉसफेरिक मॉनिटरिंग सर्विस के डायरैक्टर लॉरेंस रोउल कहते हैं, ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन लगातार बढ़ रहा है।

धरती के गर्म होने से सूखा और जंगलों की आग

नासा जेट प्रोपल्शन लेबोरेटरी में क्लाइमेट साइंटिस्ट पीटर कैलमस कहते हैं, धरती के गर्म होने से दुनिया के कुछ क्षेत्रों में सूखा ज्यादा पड़ रहा है। उच्च तापमान और सूखे की वजह से उन क्षेत्रों में बार-बार आग लगती है। मिशिगन यूनिवर्सिटी में क्लाइमेट स्कूल के डीन जोनाथन ओवरपेक का कहना है, 1999 के बाद से दक्षिण-पश्चिम अमेरिका में भयानक सूखा पड़ रहा है। इसलिए अमेरिका के पश्चिम से लेकर कनाडा तक जंगलों में आग लगती है।

दक्षिण में अधिक मुनाफे के लिए
किन्नू फल की वैक्सिंग, ग्रेडिंग जरूरी

किन्नू फलों की तुड़ाई के बाद की संभाल और भंडारण पर एक सेमिनार सिट्रस एस्टेट भुंगा, होशियारपुर में आयोजित किया गया।

इसका उद्देश्य विशेष रूप से दूर के बाज़ारों के लिए किन्नू की गुणवत्ता, शेल्फ जीवन और विपणन क्षमता में सुधार के बारे में किसानों को शिक्षित करना था।

डॉ. बी.वी.सी. पंजाब हॉर्टिकल्चरल पोस्टहार्वेस्ट टैक्नोलॉजी सैंटर के निदेशक महाजन ने कहा कि ठंड के मौसम के दौरान उत्तरी क्षेत्र में किन्नू की मांग अपेक्षाकृत कम है, लेकिन दक्षिणी राज्यों में काफी अधिक है। उन्होंने किसानों से इन दूरदराज के बाज़ारों से अधिकतम मुनाफा हासिल करने के लिए किन्नू की वैक्सिंग, ग्रेडिंग और पैकेजिंग तकनीकों को अपनाने का आग्रह किया।

बागवानी विभाग के सहायक निदेशक जसपाल सिंह ने किसानों को खेत पर तुड़ाई के बाद के बुनियादी ढांचे को विकसित करने के लिए राष्ट्रीय बागवानी मिशन कार्यक्रम के तहत विभिन्न योजनाओं का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। किसानों को संबोधित करते हुए मुख्यातिथि पी.ए.यू. के वी.सी. डॉ. सतबीर सिंह गोसल ने प्रभावी विपणन और उनकी उपज के लिए बेहतर मूल्य प्राप्त करने के लिए सहकारी समितियों के गठन के महत्व पर ज़ोर दिया। उन्होंने फलों की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए पी.ए.यू. की अनुशंसित मानक कटाई-पूर्व और कटाई-पश्चात् तकनीकों का पालन करने की भी सलाह दी। डॉ. रितु टंडन, डॉ. स्वाति कपूर और डॉ. पूजा के व्यवहारिक प्रदर्शनों ने तुलसी के आवश्यक तेल और उसके घटक यूजेनॉल से प्रप्त हरे कवकनाशी के उपयोग को प्रदर्शित किया।

किसानों को बहुत कम मिल रहा हिस्सा

पी.आई.के. के वैज्ञानिक और 'नेचर फूड' में प्रकाशित अध्ययन के प्रमुख लेखक डेविड मेंग-चुएन चेन ने कहा कि अमेरिका या जर्मनी जैसे उच्च आय वाले देशों में किसानों को खाद्य खर्च का एक चैथाई से भी कम मिलता है, जबकि उप-सहारा अफ्रीका में यह 70 प्रतिशत से भी अधिक है, जहां खेती की लागत खाद्य कीमतों का एक बड़ा हिस्सा है।

उन्होंने कहा कि यह अंतर इस बात को रेखांकित करता है कि विभिन्न क्षेत्रों में खाद्य प्रणालियां कितने अलग-अलग तरीके से काम करती हैं।

शोधकर्ताओं ने अनुमान लगाया कि जैसे-जैसे अर्थव्यवस्थाएं विकसित होंगी और खाद्य प्रणालियां औद्योगिक होंगी, किसानों को उपभोक्ता व्यय का कम हिस्सा मिलेगा।

सर्दियों में सब्ज़ियों की देखभाल

प्रशांत कौशिक, संजय कुमार और मनदीप राठी, कृषि विज्ञान केन्द्र, कैथल

गतांक से आगे

19. फसल-चक्र का महत्व : फसल-चक्र का पालन करने से मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है और रोगों का खतरा कम होता है :

*** फसल विविधता :** एक ही बागान में लगातार एक ही प्रकार की फसल उगाने से मिट्टी की उर्वरता कम हो सकती है। इसलिए, विभिन्न प्रकार की फसलें उगाएं। फसल विविधता से मिट्टी में पोषक तत्वों का संतुलन बना

रहता है।

*** विराम देना :** मिट्टी को पुनर्जीवित करने के लिए कुछ समय के लिए फसल उगाने से रोकें या ग्रीन मैन्यूरफैक्चर का उपयोग करें। मिट्टी को विराम देने से उसकी उर्वरता बढ़ती है और यह अगली फसल के लिए तैयार रहती है।

*** ग्रीन मैन्यूरफैक्चर :** ग्रीन मैन्यूरफैक्चर के माध्यम से मिट्टी की उर्वरता बढ़ाएं। ग्रीन मैन्यूरफैक्चर में आप कुछ विशेष पौधों को उगाते हैं, जो मिट्टी की संरचना को सुधारते हैं और उसे उर्वर बनाते हैं।

20. निष्कर्ष : सर्दियों में सब्ज़ियों की सफल खेती के लिए उचित योजना, सही तकनीकों का उपयोग और निरंतर देखभाल आवश्यक है। उपयुक्त किस्मों का चयन, मिट्टी की तैयारी, सिंचाई का सही प्रबंधन, कीट व रोग नियंत्रण और तापमान नियंत्रण जैसी सभी बातें मिल कर आपकी फसल को स्वस्थ और उत्पादन क्षम बनाती हैं। जैविक खेती के तरीकों को अपना कर आप न केवल अपनी फसल की गुणवत्ता बढ़ा सकते हैं, बल्कि पर्यावरण की भी रक्षा कर सकते हैं। नियमित निरीक्षण और समय पर उचित कार्रवाई से आप सर्दियों में भी उच्च पैदावार प्राप्त कर सकते हैं।

अपने बागान में इन सुझावों का पालन करें और सर्दियों के मौसम में भी समृद्ध और स्वस्थ सब्ज़ियां उगाएं। सर्दियों में कृषि करना थोड़ी कठिनाईपूर्ण हो सकता है, लेकिन सही प्रबंधन और तकनीकों के साथ आप इस मौसम में भी सफल हो सकते हैं।

अतिरिक्त सुझाव और तकनीकी जानकारी

21. सर्दियों में उर्वरक प्रबंधन : सर्दियों में उर्वरकों का सही प्रबंधन फसलों की गुणवत्ता और पैदावार को प्रभावित करता है :

*** नाइट्रोजन का महत्व :** नाइट्रोजन सर्दियों में पौधों की हरी वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण है। संतुलित मात्रा में नाइट्रोजन युक्त खाद का उपयोग करें ताकि पौधों की पत्तियां मज़बूत और हरी रहें।

*** फास्फोरस और पोटाशियम :** फास्फोरस पौधों की जड़ विकास के लिए आवश्यक है, जबकि पोटाशियम पौधों की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। दोनों पोषक तत्वों का संतुलित उपयोग फसलों को स्वस्थ बनाता है।

*** माइक्रोन्यूट्रिएंट्स :** सर्दियों में पौधों को आयरन, मैग्नीशियम और ज़िंक जैसे माइक्रोन्यूट्रिएंट्स की भी आवश्यकता होती है। इन पोषक तत्वों की कमी से पौधों में पत्तियों का पीला पड़ना या अन्य विकार हो सकते हैं। उचित उर्वरकों

का उपयोग करके इन पोषक तत्वों की कमी को पूरा करें।

22. सर्दियों में ह्यूमिडिटी प्रबंधन : सर्दियों में ह्यूमिडिटी (नमी) का सही प्रबंधन पौधों की वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण है :

*** ह्यूमिडिटी कंट्रोल :** ग्रीनहाउस में ह्यूमिडिटी को नियंत्रित करने के लिए वेंटिलेशन और फैन का उपयोग करें। अत्याधिक नमी से फफूंदी और रोग बढ़ सकते हैं।

*** हवादार कवरिंग :** पौधों को ढंकने वाली सामग्री को हवादार बनाएं ताकि हवा का संचार हो सके और अतिरिक्त नमी बाहर निकल सके।

*** ड्रायिंग :** फसल कटाई के बाद, पौधों को अच्छी तरह से सुखाएं ताकि अतिरिक्त नमी न रहे और फफूंदी का विकास न हो।

23. सर्दियों में फसल का संवर्धन : फसल संवर्धन के माध्यम से आप पौधों की उत्पादकता बढ़ा सकते हैं :

*** पौधों का संतुलित संवर्धन :** पौधों की उचित देखभाल और पोषण से उनकी उत्पादकता बढ़ती है। नियमित रूप से खाद देना, पानी देना और कीटों से रक्षा करना पौधों की उत्पादकता को बढ़ाता है।

*** पौधों की ट्रेनिंग :** पौधों को सही तरीके से ट्रेन करने से उनकी वृद्धि नियंत्रित रहती है और वे अधिक मज़बूत बनते हैं। ट्रेनिंग से पौधों की शाखाएं मज़बूत होती हैं और उनकी उपज बेहतर होती है।

*** प्रूनिंग :** पौधों की प्रूनिंग से उनकी हवा और प्रकाश की प्राप्ति बढ़ती है, जिससे उनकी वृद्धि संतुलित होती है। प्रूनिंग से पौधों की जड़ प्रणाली भी मज़बूत होती है।

24. सर्दियों में जैविक कीटनाशक : जैविक कीटनाशकों का उपयोग करके आप रासायनिक कीटनाशकों से बच सकते हैं :

*** नीम का तेल :** नीम का तेल एक प्रभावी जैविक कीटनाशक है, जो कई प्रकार के कीटों को नियंत्रित करता है। इसे पौधों पर नियमित रूप से छिड़काव करें।

*** हल्दी और मिर्च पाउडर :** हल्दी और मिर्च पाउडर को पानी में घोल कर पौधों पर छिड़काव करें। इससे कीटों का प्रभावी रूप से नियंत्रण होता है।

*** साबुन पानी :** हल्के साबुन को पानी में घोल कर पौधों पर छिड़काव करें। इससे पत्तियों पर कीटों का प्रभाव कम होता है और पौधों को फायदा होता है।

25. सर्दियों में मल्चिंग के प्रकार : मल्चिंग से पौधों की रक्षा होती है और मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है :

*** भूसा मल्च :** भूसा का उपयोग मिट्टी की सतह पर मल्च के रूप में करें। यह नमी को बनाए रखता है और पौधों को ठंड से बचाता है।

*** पत्ते और कद्दू :** सूखे पत्ते और कद्दू के टुकड़े भी मल्च के रूप में उपयोग किए जा सकते हैं। ये प्राकृतिक मल्च होते हैं, जो मिट्टी को उर्वर बनाते हैं।

*** फेक्सिनेटेड मल्च :** फेक्सिनेटेड मल्च का उपयोग करके आप मिट्टी में जैविक पदार्थों की मात्रा बढ़ा सकते हैं। फेक्सिनेटेड मल्च से मिट्टी की संरचना भी सुधरती है।

26. सर्दियों में पौधों का जल संरक्षण : पौधों की जल संरक्षण के माध्यम से आप पानी की बचत कर सकते हैं :

*** ड्रिप इरिगेशन :** ड्रिप इरिगेशन प्रणाली का उपयोग करके पानी की बचत करें और पौधों को सीधे जड़ों तक पानी पहुंचाएं। इससे पानी की अधिकता नहीं होती और पौधों को पर्याप्त नमी मिलती है।

*** वाटर हार्वेस्टिंग :** वर्षा के पानी को संग्रहित करने के लिए वाटर हार्वेस्टिंग की व्यवस्था करें। इससे आपको सर्दियों में भी पानी की उपलब्धता बनी रहती है।

*** मल्चिंग :** मिट्टी की सतह पर मल्च डालने से पानी की वाष्पीकरण की दर कम होती है और मिट्टी में नमी बनी रहती है।

27. सर्दियों में पौधों का स्वास्थ्य : पौधों के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए निम्नलिखित उपाय करें :

*** संतुलित पोषण :** पौधों को आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करें, ताकि वे स्वस्थ और मज़बूत रहें। संतुलित खाद का उपयोग करें और पौधों की आवश्यकताओं के अनुसार उर्वरकों का चयन करें।

*** रोग प्रतिरोधक :** पौधों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए जैविक उपायों का उपयोग करें। नीम का तेल, हल्दी और मिर्च पाउडर से पौधों को रोगों से बचाएं।

*** सही सिंचाई :** पौधों को सही मात्रा में पानी दें ताकि उनकी जड़ें मज़बूत रहें और पौधे स्वस्थ रहें। अधिक या कम पानी देने से पौधों की वृद्धि प्रभावित हो सकती है।

28. सर्दियों में फसल की पैदावार बढ़ाना : फसल की पैदावार बढ़ाने के लिए निम्नलिखित उपाय करें :

*** सही बुवाई :** सही समय पर बुवाई करें और बीज को उचित गहराई पर बोएं। इससे पौधों की वृद्धि होती है और पैदावार बढ़ती है।

*** पोषण :** पौधों को आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करें

ताकि वे मज़बूत और उत्पादनक्षम बनें। जैविक खाद का उपयोग करें और पौधों को संतुलित पोषण दें।

*** कीट नियंत्रण :** कीटों से पौधों की रक्षा करें ताकि उनकी वृद्धि प्रभावित न हो। जैविक कीटनाशकों का उपयोग करें और कीटों की पहचान समय रहते करें।

29. सर्दियों में जैविक खेती के लाभ : जैविक खेती के माध्यम से आप सर्दियों में स्वस्थ और सुरक्षित सब्ज़ियां उगा सकते हैं।

*** प्राकृतिक उर्वरक :** जैविक खेती में प्राकृतिक उर्वरकों का उपयोग होता है, जो मिट्टी को उर्वर बनाते हैं और पौधों को आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करते हैं।

*** रासायनिक मुक्त :** जैविक खेती में रासायनिक कीटनाशकों और उर्वरकों का उपयोग कम होता है, जिससे फसल स्वस्थ्यवर्धक होती है।

*** पर्यावरण की रक्षा :** जैविक खेती पर्यावरण के प्रति संवेदनशील होती है और मिट्टी की संरचना को सुधारती है, जिससे पर्यावरण की रक्षा होती है।

30. सर्दियों में कृषि के भविष्य के लिए सुझाव : सर्दियों में कृषि को और भी सफल बनाने के लिए भविष्य में निम्नलिखित सुझावों पर ध्यान दें :

*** नवीनतम तकनीकों का उपयोग :** आधुनिक कृषि तकनीकों का उपयोग करें, जैसे कि स्मार्ट इरिगेशन सिस्टम, तापमान नियंत्रण प्रणालियां और जैविक कीटनाशक।

*** शिक्षा और प्रशिक्षण :** किसानों को सर्दियों में कृषि की सही तकनीकों के बारे में शिक्षित करें। प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करें ताकि किसानों को नई तकनीकों का ज्ञान हो।

*** साझेदारी और सहयोग :** कृषि संगठन और सरकारी एजेंसियों के साथ साझेदारी करें ताकि किसानों को आवश्यक संसाधन और समर्थन मिल सके।

*** अनुसंधान और विकास :** सर्दियों में कृषि के लिए नए और बेहतर तरीकों का अनुसंधान करें। नई किस्मों का विकास करें, जो सर्दियों के मौसम में अच्छी पैदावार दे सकें।

निष्कर्ष : सर्दियों में सब्ज़ियों की सफल खेती के लिए उचित योजना, सही तकनीकों का उपयोग और निरंतर देखभाल आवश्यक है। उपयुक्त किस्मों का चयन, मिट्टी की तैयारी, सिंचाई का सही प्रबंधन, कीट व रोग नियंत्रण और तापमान नियंत्रण जैसी सभी बातें मिल कर आपकी फसल को स्वस्थ और उत्पादनक्षम बनाती हैं। जैविक खेती के तरीकों को अपनाकर आप न केवल अपनी फसल की गुणवत्ता बढ़ा सकते हैं, बल्कि पर्यावरण की भी रक्षा कर सकते हैं। नियमित निरीक्षण और समय पर उचित कार्रवाई से आप सर्दियों में भी उच्च पैदावार प्राप्त कर सकते हैं। अपने बागान में इन सुझावों का पालन करें और सर्दियों के मौसम में भी समृद्ध और स्वस्थ सब्ज़ियां उगाएं। सर्दियों में कृषि करना थोड़ी कठिनाईपूर्ण हो सकता है, लेकिन सही प्रबंधन और तकनीकों के साथ आप इस मौसम में भी सफल हो सकते हैं। ❑

छोटे अपार्टमेंट की बालकनी को सजाना एक कला है। इसे न केवल स्टाइलिश बनाया जा सकता है, बल्कि यह एक उपयोगी और आरामदायक स्थान भी बन सकती है। बालकनी को एक बोनस रूम की तरह डिजाइन करें या इसे सुकून और आराम का कोना बनाएं।

'छोटी बालकनी' को सजाएं सुंदर ढंग से

किफायती डेकिंग : आमतौर पर अपार्टमैंट की बालकनी में साधारण कंक्रीट का फर्श होता है। इसे सुंदर बनाने के लिए इंटरलॉकिंग डेक टाइल्स का इस्तेमाल करें। ये आसानी से लगाई और हटाई जा सकती है, जो किराएदारों के लिए भी एक अच्छा विकल्प है।

सुझाव : लकड़ी या प्लास्टिक की डेकिंग का उपयोग करें। इसे मौसमरोधी मैट से सजाएं।

पौधों से सजावट : पौधे किसी भी बालकनी को सुंदर बना सकते हैं। छोटे गमलों, हैंगिंग प्लांट्स, रंग-बिरंगे फूल और वर्टिकल गार्डन का इस्तेमाल करें। आर्टिफिशियल ग्रास बिछाएं।

सुझाव : रेलिंग पर हैंगिंग प्लांट बॉक्स लगाएं। कोने में बड़े पौधे रखें। वर्टिकल गार्डन से दीवारों को सजाएं। सिंथैटिक घास बिछा कर बालकनी को प्राकृतिक रूप दें।

प्राइवेसी स्क्रीन : पतले बांस या लकड़ी से बनी प्राइवेसी स्क्रीन इस्तेमाल करें। यह अलग दिखाने के साथ-साथ आपको निजता भी देगी।

सुझाव : आधी ऊंचाई की प्राइवेसी स्क्रीन लगाएं। प्राकृतिक और हल्की सामग्री का इस्तेमाल करें।

अंडाकार चेयर ट्राई करें, झूला लगाएं : साधारण कुर्सियों की बजाय एक अंडाकार चेयर या झूले जैसी खास चीज जोड़ें। यह कम जगह में आकर्षक और आरामदायक विकल्प है। झूला बालकनी का आकर्षण बढ़ा सकता है।

सुझाव : पारंपरिक लकड़ी के झूलों से लेकर मॉडर्न डिजाइन तक, यह हर प्रकार की बालकनी में फिट होता है।

रंगों और पैटर्न के साथ काम करें : अपनी बालकनी को सजाने के लिए रंगों और पैटर्न का इस्तेमाल करें।

सुझाव : फर्श पर सजावटी टाइल्स और कुशन पर प्रिंट्स का इस्तेमाल करें।

फर्श पर टाइल्स लगाएं : अगर आप अपने बालकनी के फर्श को स्थायी रूप से बदलना चाहते हैं, तो आऊटडोर टाइल्स का इस्तेमाल करें।

सुझाव : ज्योमैट्रिक डिजाइन वाली टाइल्स का इस्तेमाल करें। दीवारों पर टैराकोटा ब्रिक टाइल्स लगाएं।

टिकाऊ फर्नीचर चुनें : ऐसा फर्नीचर चुनें, जो मौसमरोधी हो और पूरे साल बाहर रह सके।

सुझाव : टिकाऊ लकड़ी, सिंथैटिक विकर और वाटरप्रूफ कवर का इस्तेमाल करें।

बालकनी बार लगाएं : अगर जगह कम है, तो रेलिंग पर एक बालकनी बार जोड़ें। यह खाने-पीने या लैपटॉप पर काम करने के लिए आदर्श है।

ग्लास रेलिंग लगाएं : ग्लास रेलिंग बालकनी को बड़ा और खुला दिखाती है। यह रोशनी को अंदर लाने और जगह को आधुनिक लुक देती है।

इसे चमकदार और रंगीन बनाएं : बालकनी को रंगीन कुशन और शोपीस से सजाएं।

– रक्षा सेठी, इंटीरियर डिजाइनर

जलवायु परिवर्तन में भारत की भूमिका

वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों की जीवन शैली के प्रतिदर्श में सकारात्मक परिवर्तन के लिए भारत की भूमिका महत्वपूर्ण एवं प्रशंसनीय है। नीतियां और वैश्विक व्यवस्था की समस्त बुराइयों पर राहत नहीं दे सकती, जब तक भारत सहित वैश्विक समुदाय इस महायज्ञ में आहुति देने के लिए संकल्पित भाव से काम ना कर सके। किसी भी काम की गुणवत्ता, उसके कार्यकर्त्ता के कार्य, प्रभाव, महत्वपूर्ण भूमिका और व्यक्तित्व से होता है। व्यक्तिगत क्रियाएं और मानवीय व्यवहार प्रतिदर्श जलवायु से संबंधित क्रियाएं एवं जलवायु से संबंधित मुद्दों के समाधान का एक महत्वपूर्ण भाग हो सकता है।

वैश्विक स्तर पर जलवायु समस्या के समाधान के लिए भारत का प्रयास महत्वपूर्ण और आवश्यक है, क्योंकि भारत वैश्विक स्तर पर उभरता नेतृत्व है, जो विकसित और विकासशील राष्ट्र-राज्यों का नेतृत्व कर रहा है। भारत अपने लोगों को हरित विकल्पों और टिकाऊ उपभोग प्रतिदर्श अपनाने में सहयोगी है। यह अच्छी सक्रिया है, जो चिरकाल तक युवाओं के व्यवहार में आकर उनकी आदत बन जाती है। भारत वैश्विक स्तर पर युवाओं को जलवायु अनुकूल और टिकाऊ उपभोग के प्रेरक कार्य जलवायु न्याय की दिशा में उपादेय सिद्ध होगा। प्रयागराज में आयोजित हो रहा 'प्रयाग महाकुंभ, 2025' जलवायु न्याय की दिशा में सकारात्मक एवं प्रासंगिक उत्सव है। भारत सम्पूर्ण संसार के लिए एवं पृथ्वी ग्रह के स्वास्थ्य के रख-रखाव के अपने मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में समानता और जलवायु न्याय के साथ एक सामूहिक यात्रा करने का क्षमता और धारिता रखता है। जलवायु परिवर्तन में भारत की भूमिका भूमंडलीय तापन और जलवायु परिवर्तन के खिलाफ वैश्विक स्तर के संघर्ष में महान योगदान है। भारत ने 'विकसित राष्ट्र-राज्यों और विकासशील राष्ट्र-राज्यों के लिए जलवायु परिवर्तन के लिए' एक साथ कार्यान्वयन की नीति की अनुशंसा की है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आर.एस.एस.) के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत का कहना है कि पर्यावरण संरक्षण और संवर्धन के लिए प्रत्येक व्यक्ति, समाज, नागरिक सरकार एवं संगठन को आगे आना होगा। किसी भी शुभावसर के लिए पहला कदम स्वयं चलना होता है। उत्पादन, वितरण एवं उपभोग के हर चरण में हम सभी को प्रकृति, पर्यावरण और मातृ भूमि का ध्यान रखना चाहिए। वर्तमान में सम्पूर्ण दुनिया जलवायु संकट से जूझ रही है, तब भारत की ओर सम्पूर्ण विश्व समुदाय देख रहा है। भारत ने प्रकृति अनुकूल व्यवहार और परम्पराओं से यह प्रमाणिकता अर्जित की है। वर्तमान में भारत ग्रीन हाउस गैसों (सीओ2) का तीसरा सबसे बड़ा उत्सर्जक है। इसके पीछे उत्तरदाई कारक है कि भारत वैश्विक स्तर पर दूसरी सबसे बड़ी जनसंख्या वाला राज्य है।

भारत को ऐतिहासिक उत्सर्जन के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता, जिसके लिए अधिकांश विकसित राष्ट्र-राज्य जिम्मेदार है। वर्तमान में भारत वैश्विक स्तर पर लगभग सभी बहुपक्षीय शिखर सम्मेलनों एवं बहुपक्षीय अंतरराष्ट्रीय संगठनों में नियम-निर्धारक की भूमिका निभा रहा है, जो विशेष तौर पर वैश्विक भूतापन और जलवायु परिवर्तन से संबंधित है। भारत परम्परागत स्तर पर सरल जीवन शैली और व्यक्तिगत प्रथाएं, जो प्रकृति में टिकाऊ है, पृथ्वी माता के स्वास्थ्य की संरक्षा कर सकता है। यह कार्य निश्चित तौर पर भूमंडलीय तापन के प्रभाव को न्यून करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

इस कदम से प्राकृतिक आपदाओं का प्रभाव न्यून किया जा सकता है। इससे विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव दिखाई दे रहा है। भारत ने वैश्विक स्तर पर अपने दीर्घकालिक उत्सर्जन विकास रोड मैप को प्रस्तुत किया है और वर्ष 2030 तक शुद्ध शून्य लक्ष्य प्राप्त करने के उद्देश्य से अपने घरेलू स्तर पर निर्धारित योगदान का वर्णन किया है। भारत विकसित राष्ट्र-राज्यों से वित्तीय सहायता की वकालत करता है।

भारत ने वैश्विक स्तर के राष्ट्र-राज्यों से वादा किया है कि उसने उत्सर्जन में कटौती के लिए पहले से ही सकारात्मक पहल की है। भारत का सफलतम और दृढ़ विश्वास है कि जलवायु परिवर्तन की दिशा में पहले से ही सफल प्रयास कर रहा है।

डॉ. सुधाकर कुमार मिश्रा

शेष पृष्ठ 3 की

गोभी सरसों में सल्फर प्रबंधन का महत्व

जिसमें बहुत कम या न के बराबर सल्फर का होना।

* जहां अकार्बनिक खादें प्रयोग में नहीं आती हैं, वहां पर भी सल्फर की कमी का होना।

* हाल ही में तोड़ कर विकसित की गई भूमि या हल्क गठन वाली बलुई मिट्टी में, जहां निक्षालन द्वारा पोषक तत्वों की हानि हो जाती है, गंधक की कमी पाई जा सकती है।

गंधक की कमी के लक्षण

* पौधों की पूर्ण रूप से सामान्य बढ़ोत्तरी नहीं हो पाती तथा जड़ों का विकास भी कम होता है।

* पौधों की ऊपरी पत्तियों (नई पत्तियों) का रंग हल्का फीका व आकार में छोटा हो जाता है। पत्तियों की धारियों का रंग तो हरा रहता है, परन्तु बीच का भाग पीला हो जाता है।

* पत्तियां कप के आकार की हो जाती हैं तथा पत्तियों की निचली सतह एवं तने लाल हो जाते हैं।

* पत्तियों के पीलापन की वजह से भोजन पूरा नहीं बन पाता और उत्पादन में कमी आने से तेल का प्रतिशत कम हो जाता है।

* जड़ों की वृद्धि कम हो जाती है।

* तने कड़े हो जाते हैं तथा कभी-कभी ये ज्यादा लम्बे व पतले हो जाते हैं।

* फसल की गुणवत्ता में भी कमी आ जाती है।

गंधक की कमी को दूर करना

गंधक की कमी गंधक युक्त निम्नलिखित उर्वरकों के प्रयोग से दूर की जा सकती है। (सारणी-1)

इन उर्वरकों में गंधक, सल्फेट के रूप में पाया जाता है, जिसका उपयोग पौधे सुगमता पूर्वक कर लेते हैं। भारत में गंधक उर्वरकों की कम लागत के कारण तिलहन फसलों की उत्पादकता कम रहती है। तिलहन फसलों की सल्फर आवश्यकताएं कई गंधक युक्त सामग्रियों से पूरा किया जा सकता है, जैसे जिप्सम, फॉस्फोजिप्सम, पाइराइट और सल्फेट। इसे प्राथमिक पोषक तत्व उर्वरक जैसे अमोनियम सल्फेट, एस.एस.पी., पोटाशियम सल्फेट आदि के साथ भी मिलाया जा सकता है।

फूलों के मुख्य कीट एवं उनका प्रबंधन

फूलों का मानव जीवन से अति निकट का संबंध रहा है। सभी संस्कारों तथा उत्सवों में फूलों की उल्लेखनीय भूमिका रहती है। रंग–बिरंगे, सुगंधित पुष्प जीवन में सुखद वातावरण का निर्माण करके प्रेरण, स्फूर्ति तथा सृजनात्मक प्रवृतियों का विकास करते हैं। पुष्प उत्पादन एक बहुत ही लाभकारी व्यवसाय है। पुष्प उत्पादन से प्रति इकाई क्षेत्र से दूसरी खाद्यान्न फसलों की अपेक्षा अधिक आय मिलती है। फूलों की खेती पर अनुसंधान के साथ–साथ आवश्यक सुविधाओं का विकास एवं तकनीकों का मानकीकरण हुआ है। इससे किसानों एवं उद्यमियों ने भी व्यापार के लिए फूलों की खेती को व्यवसाय के रूप में अपनाया है। सजावटी पौधों की मांग दिन–प्रति दिन बढ़ती जा रही है। गहन उत्पादन तकनीको, नवीन प्रजातियों के उपयोग, फसल एकरूपता तथा एक ही फसल को कई वर्षों तक एक ही भूमि पर लगाने से कीट–पतंगों के प्रकोप को बढ़ावा मिलता है। व्यावसायिक तौर पर पुष्प उत्पादन करने के लिए कीटों उनके लक्षणों एवं प्रबंधन की जानकारी आवश्यक है। इस संदर्भ में प्रमुख पुष्पीय फसलों के कीटों एवं प्रबंधन के बारे में जानकारी देने का प्रयास किया गया है।

ऋतु जैन और बबीता सिंह, पुष्प विज्ञान एवं भूदृश्य निर्माण संभाग, आईएआरआई, पूसा, नई दिल्ली

पुष्पीय फसलों को उगाने में अधिक देखभाल की आवश्यकता होती है। पुष्पीय फसलों में अधिक रोग पाए जाते हैं। इस कारण बाजार में

फूलों का कम मूल्य प्राप्त होता है। इससे कृषक को आर्थिक हानि होती है। देश में पुष्प व्यवसाय एक उद्यम के रूप में विकसित हो रहा है। भारत में विभिन्न प्रकार की पुष्पीय फसलों को उगाया जाता है। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कर्तित पुष्पों में गुलाब का प्रमुख स्थान है। गुलदाउदी एवं गेंदे की भी घरेलू बाजार में मुख्य भूमिका है। इसके साथ ही कंदीय पुष्पों में लिलियम, ग्लेडिओलस और रजनीगंधा का व्यावसायिक पुष्प उत्पादन अहम स्थान रखता है।

गुलाब के प्रमुख कीट एवं उनका प्रबंधन

माहू :– इस कीड़े का आक्रमण जनवरी–फरवरी में अधिक होता है। ये काले रंग में हरापन लिए नन्हें कीट होते हैं। इसके शिशु और वयस्क दोनों ही पौधों के मुलायम प्ररोह, कली और पुष्पों पर एकत्र होकर कोशिकाओं से रस चूसते हैं। फलस्वरूप कोमल कलियां गिरने लगती हैं और फूल अपना सौंदर्य खो देते हैं। इसके उपचार के लिए कीट दिखाई देते ही मैलाथियान अथवा रोगोर (1–2 मि.ली.) प्रति लीटर पानी में घोलकर 2 से 3 बार छिड़काव करें।

लाल मकड़ी कीट :– यह गुलाब का बड़ा विनाशकारी कीट है। इसका प्रकोप अगस्त–सितंबर में होता है। यह पत्तियों के नीचे, फिर सारी पत्तियों एवं तने तथा अंततः पूरे पौधे पर जाल सा बना देता है। इस प्रकार फूल बेचने योग्य नहीं रहता। इसकी रोकथाम के लिए मैलाथियान (1 मि. ली. प्रति लीटर पानी) एवं पैराथियान (2.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी) के घोल का छिड़काव अप्रैल में तथा दूसरे घोल का छिड़काव अक्तूबर में करना चाहिए।

भृंग :– अगस्त–सितंबर में इनका प्रकोप अधिक होता है। वयस्क भृंग रात में निकलकर पत्तियों को खाता है तथा तीव्र आक्रमण के समय पूरा पौधा पत्ती रहित हो जाता है। इसके नियंत्रण के लिए मोनोक्रोटोफॉस 1 मि.ली. या डाईमेथोएट 1.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी का छिड़काव करना चाहिए।

गुलदाउदी के कीट एवं प्रबंधन

माहू :– यह छोटे हरे–काले रंग के बिंदी जैसे कीट होते हैं। यह बड़ी संख्या में दिखाई देते हैं। ये कीट मुलायम भागों जैसे कली, छोटी पत्तियों और मुलायम तनों का रस चूस लेते हैं। प्रभावित फूल की कलियां खिलने से पहले ही सूख जाती हैं। यह कीट दिसंबर एवं फरवरी–मार्च में अधिक क्षति पहुंचाता है। इसकी रोकथाम के लिए 15 दिनों के अंतराल पर मोनोक्रोटोफॉस (1 मि.ली. प्रति लीटर पानी) या मैलाथियान (1 मि.ली. प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करना चाहिए।

माईट्स :– ये बहुत ही छोटे बिंदु जैसे लाल रंग के कीट हैं, जो पत्तियों की निचली सतह पर मुख्यतः गर्मियों में दिखाई देते हैं। प्रभावित फूल की कलियां खिलने में असफल रहती हैं या खिलने से पहले ही सूख जाती हैं। 15 दिनों के अंतराल पर डाईकोफॉल (5 मि.ली. प्रति 10 लीटर पानी) या वर्टीमैक अथवा पैंटेक (5 मि.ली. प्रति 10 लीटर पानी) का छिड़काव करना चाहिए।

पत्ती सुरंग कीट :– इसका प्रकार मार्च और जून के दौरान होता है। यह कीट पॉलीहाऊस में ज्यादा विनाशकारी होता है। इसके छोटे कीट डिम्भ पत्ती की निचली सतह और ऊपरी सतह के बीच सुरंग बना देते हैं। अत्यधिक प्रभाव के कारण पत्तियों सम्पूर्ण रूप से सूखकर गिर जाती है। प्रभावित पत्तियों को तोड़कर नष्ट कर देना चाहिए। प्रभावित पौधों पर मोनोक्रोटोफॉस एवं ट्राईजोफॉस (5 मि. ली. प्रति 10 लीटर पानी) का छिड़काव करना चाहिए।

पत्ती मोड़क कीट :– इसकी सभी इल्ली अवस्थाएं पौधे को प्रभावित करती हैं। रेशमी धागे की सहायता से इल्लियां पत्तियों को मोड़ देती हैं और पत्तियों को अंदर से खाना प्रारंभ कर देती हैं। इसके उपचार के लिए 15 दिनों के अंतराल पर साईपर मैथ्रिन, डोकैम थ्रीन (2 मि.ली. प्रति 10 लीटर पानी) अथवा क्विनलफॉस (5 मि. ली. प्रति 10 लीटर पानी) का छिड़काव करें।

गेंदे के प्रमुख कीट एवं उनका प्रबंधन लाल मकड़ी कीट :– यह कीट पुष्पन के समय दिखाई देता है। पौध पर धूल सी नजर आती है। मेटासिस्टाक्स (25 ई.सी.) या रोगोर या नुवान (40 ई.सी.) केराथेन 1 मि. ली./प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से इसे नियंत्रित किया जा सकता है।

रोयेंदार सूंडी :– यह कीट पत्तियों को खा जाती है। इसे नुवान या थियोडॉन के एक मि.ली. प्रति लीटर पानी में डालकर छिड़काव करने से नियंत्रित किया जा सकता है।

लिलियम के प्रमुख कीट एवं उनका प्रबंधन चेपा/माहू :– चेपा, लिली में पाए जाने वाला प्रमुख कीट हैं। विषाणुजनित रोग फैलाने में प्रमुख भूमिका निभाता है। इसके प्रभाव से पत्तियां मुड़ जाती हैं और ऊपर की पत्तियों के आकार में बदलाव आ जाता है। विभिनन प्रकार के कीटनाशी जैसे–मैलाथियान, पैराथियान (2 मि. ली. प्रति लीटर पानी) का छिड़काव इनकी रोकथाम में सहायक होते हैं।

काष्ठ :– लियोथ्रिप्स वेनेकी एवं टेनियोथ्रिप्स सिम्पलैक्स द्वारा होता है। यह लिली के कंदों को बहुत ही हानि पहुंचाता है। कंदों के शल्क पर भूरे रंग के धब्बे पड़ जाते हैं। ये बाद में ढीले पड़कर कंद से टूटकर अलग हो जाते हैं। प्रभावित केंदों को रोपित करने पर उनकी वृद्धि नहीं होती है। इनकी रोकथाम के लिए कंदों में मैलाथियान (1 मि.ली. प्रति लीटर पानी) का छिड़काव उपयुक्त माना गया है। कंदों को 10° सेल्सियस के तापमान पर भंडारित करना चाहिए। इन कंदों पर मिथाईल ब्रोमाईड का छिड़काव या फिर कंदों को एक घंटे के लिए 43° सेल्सियस तापमान वाले पानी में उपचारित करना चाहिए।

सूत्रकृमि :– कंदीय पुष्प होने के कारण इनमें सूत्रकृमि का भी प्रकोप पाया जाता है। इनके कारण पौधों की वृद्धि अवरूद्ध हो जाती है। इनकी पत्तियों पर पीले रंग के धब्बे पड़ जाते हैं। इनकी रोकथाम के लिए कंदों को फार्मालिन (2 प्रतिशत) के घोल में 43° सेल्सियस तापमान पर एक घंटे के लिए उपचारित करना चाहिए। प्रभावित कंदों से जड़ों को काटकर अलग कर देना चाहिए। इनकी रोकथाम के लिए सूत्र कृमिनाशी जैसे वि वैपाम, ऑक्सीमाईल, ग्रेन्यूल या मिथाईल ब्रोमाईड को प्रयोग में लाना चाहिए।

चमेली के प्रमुख कीट एवं उनका प्रबंधन कृमि कलिका :– कृमि कलिका की सुंडी हरे रंग की तथा सिर काले रंग का होता है। यह अपरिपक्व कलिका तथा पुष्प को खाकर नष्ट कर देती है। इसका नियंत्रण मोनोक्रोटोफॉस (2 मि.ली./लीटर पानी) के छिड़काव द्वारा किया जा सकता है।

लाल मकड़ी :– इस कीट का प्रकोप शुष्क तथा गर्म मौसम में बहुत अधिक होता है। लाल मकड़ी पत्तियों की निचली सतह को खाकर नुक्सान पहुंचाती है। इससे पत्तियां पीली पड़कर टूटकर गिर जाती हैं। इसकी रोकथाम के लिए थीमेट प्रभावी नियंत्रक है।

जरबेरा के प्रमुख कीट एवं उनका प्रबंधन

पत्ती सुरंगक कीट :– यह कीट पौधों की पत्तियों पर आड़ी–तिरछी सुरंगे बना देते हैं। इसकी वजह से पत्तियां हल्की पीली से भूरे रंग की हो जाती हैं। नियंत्रण के लिए प्रभावित पौधों को नष्ट कर देना चाहिए। साईपरमेथ्रीन (0.5–0.75 मि.ली. प्रति लीटर) या डाईक्लोवोस (0.5–1.8 मि.ली. प्रति लीटर) को पानी में मिलाकर छिड़काव किया जा सकता है।

माईट्स :– ये छोटे–छोटे भूरे रंग के कीट होते हैं, जो प्रायः नंगी आंखों से दिखाई नहीं देते हैं। ये पत्तियों की निचली सतह पर रहते हैं। पत्तियो का रस चूसकर धब्बे जैसे बनाते हैं। अधिक माईट लगने पर पत्तियों पर जाला बनाते हैं। गर्म व सूखे स्थान पर इनका प्रभाव ज्यादा होता है। इनका नियंत्रण इंडोसल्फान (2.0 मि.ली./लीटर) या डाइकोफॉल (1.5 मि.ली. प्रति लीटर) के छिड़काव द्वारा किया जा सकता है।

काष्ठ कीट :– यह भूरे रंग के पंखों वाली चींटी की तरह दिखने वाला अति सूक्ष्म कीट है। ये कीट पौधों की मुलायम शाखाओं, पत्तियों तथा फूलों की कली का रस चूसते हैं। इससे मटमैले भूरे रंग के धब्बे पड़ जाते है। इंडोसल्फान या डाईकोफॉल 2 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर

छिड़काव कर थ्रिप्स पर नियंत्रण कर सकते हैं।

कारनेशन के प्रमुख कीट एवं उनका प्रबंधन

लाल मकड़ी कीट :– ये कीट पत्ती के निचले हिस्से को खाते हैं तथा रस चूसते हैं। इसके कारण पत्तियां पीली पड़ जाती हैं। इन पर जाल जैसी संरचना बन जाती है। माईट अधिकतर पौधे के निचले हिस्से पर आक्रमण करती हैं। गर्म दशा में ये कीट ज्यादा आक्रमण करते हैं। इनके नियंत्रण के लिए खरपतवार का पूर्ण नियंत्रण रखना चाहिए तथा रोकथाम के लिए क्लोरोफेनापाईरॉट 50–100 ग्राम प्रति हैक्टेयर की दर से देना चाहिए।

माहू :– माहू या एफिड (माईजम परसीकी) कारनेशन के महत्वपूर्ण कीटों में से एक है। यह विषाणु रोगों के वाहाक होते हैं। हरे रंग के छोटे–छोटे कीट झुंड में नई शाखाओं व कलियों पर पाए जाते हैं। ये रस चूसकर पौधे को हानि पहुंचाते हैं। इनकी रोकथाम के लिए खरपतवार का पूर्ण नियंत्रण रखना चाहिए। क्षतिग्रस्त भाग को नष्ट कर देना चाहिए। दस दिनों के अंतराल पर रोगोर, मैलाथियान (2 मि.ली./लीटर) या नुवान (1.5 मि. ली. प्रति लीटर की दर से) का छिड़काव करना चाहिए।

ग्लैडियोलम के प्रमुख कीट एवं उनका प्रबंधन

माहू (एफिड) :– ये छोटे गोल आकर के कीट होते हैं। इनके शिशु व वयस्क दोनों ही पौधों की कोशिकाओं से रस चूसते हैं। इनका प्रकोप फरवरी–मार्च में ज्यादा होता है, जब मौसम हल्का गर्म होता है। इसके नियंत्रण के लिए मैलाथियन 50 ई. सी. या मेटासिस्टॉक्स 25 ई.सी. (15 मि.ली. प्रति 10 लीटर पानी) का छिड़काव करना चाहिए।

काष्ठ (थ्रिप्स) :– ये ऊतकों को कुरेद या खरोंच देते हैं। इससे कोशिकाओं में घाव बन जाते हैं। इन घावों से निकले रस को ये चूसते हैं। इनके आक्रमण से पत्तियों तथा फूलों पर भूरे रंग के चकत्ते पड़ जाते हैं। इसके नियंत्रण के लिए मेटासिस्टॉक्स या रोगर 30 ई.सी. (2 मि.ली. प्रति लीटर पानी) पानी में घोलकर छिड़काव करें

सूत्रकृमि (निमेटोड) :– सूत्रकृमि की विभिन्न प्रजातियां भी ग्लैडियोलस की फसल के लिए हानिकारक साबित हो सकती है। इनका प्रकोप मुख्य रूप से बलुई मृदा व गर्म जलवायु में अधिक पाया गया है। इनके प्रकोप से पौधों की जड़ों में गांठें बनने लगती हैं। नियंत्रण के लिए कंदों को 53° सेल्सियस तापमान पर 30 मिनट के लिए गर्म पानी में उपचारित करना चाहिए। थीमेट 4–10 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव इसके नियंत्रण में सहायक होता है।

रजनीगंधा के प्रमुख कीट एवं उनका प्रबंधन :– रजनीगंधा की फसल पर चेपा (एफिड प्रजातियां), काष्ठ (थ्रिप्स सिम्पलैक्स) तथा सुंडी (हीलिओथिम आर्मीजिरा) कीटों का सर्वाधिक प्रकोप होता है। चेपा और काष्ठ कीटों को रोकथाम करने के लिए फसल पर केलथिन (डाईकोफिल), डाईमेथोएट, (रोगोर) अथवा ऑक्सीडेमेटोन मिथाईल (मेटासिस्टॉक्स) कीटनाशियों का 1.5 से 2.0 मि.ली. प्रति लीटर की दर से पानी में घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करना चाहिए। सुंडियों को नियंत्रित करने के लिए फसल पर एंडोसल्फान (2 मि. ली./लीटर) अथवा मेथाइलपाराथिओन (1 मि.ली./लीटर) के घोल का छिड़काव करना लाभप्रद रहता है।

बिना एम.एस.पी. गारंटी कानून

कृषि ड्राफ्ट पॉलिसी के सुधार किसानों का आर्थिक शोषण करेंगे

भारत में आदिकाल से कृषि विपणन व्यवस्था किसानों के लिए शोषणकारी रही है। मध्यकालीन भारत में ग्रामीण क्षेत्र में समुचित मुद्रा व्यवस्था और नाप-तोल पैमाने उपलब्ध नहीं होने के कारण, कृषि विपणन वस्तु विनिमय प्रणाली पर आधारित था। अंग्रेज़ों के राज में भी समुचित कृषि उपज मंडियों के अभाव में साहूकार और बिचौलियों की दुकानों पर कृषि विपणन कच्चे नाप-तोल पैमाने और शोषणकारी मूल्य पर ही चलता रहा और किसानों का खुला आर्थिक शोषण होता था।

देश में कृषि विपणन के लिए सबसे अहम् क्रान्तिकारी सुधार वर्ष 1939 में सर छोटूराम ने पंजाब कृषि उपज मार्केट एक्ट बना कर किया, जिसमें कृषि उपज मंडियों को सरकारी नियंत्रण में स्थापित किया गया। आज़ादी के बाद, लगभग सभी राज्यों ने इस कानून को अपनाते हुए, अपने राज्यों में कृषि उपज मंडियों की स्थापना की। इन कृषि उपज मंडियों में, सरकारी कानूनों के तहत कृषि उपज की मंडियों में खुली बोली द्वारा बिक्री का प्रावधान रखा गया। लेकिन कृषि उपज मंडियों में किसान की उपज को सस्ते में खरीदने के लिए, चतुर साहूकारों और बिचौलियों ने कारोबारी कार्टेल बना कर खुली बोलियों में दाम की हेराफेरी करके किसानों का खूब शोषण करते रहे हैं।

किसानों को आर्थिक शोषण से बचाने के लिए, वर्ष 1966 में सरकार ने फसलों के समर्थन मूल्य घोषित करने की पॉलिसी बनाई, जिसके अन्तर्गत सरकार प्रति वर्ष फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य घोषित करती है और इन मूल्यों पर सार्वजनिक खाद्य वितरण प्रणाली के लिए सरकारी खरीद भी करती है, जिसके अनुसार घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य से कम पर कृषि उपज की खरीद किसानों का खुला शोषण है, जिसे रोकना सरकार की कानूनी जिम्मेवारी है। लेकिन पिछले 58 वर्ष में किसी भी सरकार ने किसानों के शोषण को रोकने के लिए घोषित समर्थन मूल्य की कानूनी बाध्यता कृषि उपज मंडियों में लागू नहीं की।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग और विकास संगठन की रिपोर्ट के अनुसार किसानों को एम.एस.पी. से कम दाम मिलने से पिछले 2 दशक में लगभग 60 लाख करोड़ रुपए का नुकसान हुआ है। इसके अलावा, सरकार ने केवल एक वर्ष 2024 में हरियाणा-पंजाब से गेहूं-धान की सरकारी खरीद सी-2 (कुल लागत) की बजाय ए-2+एफ.

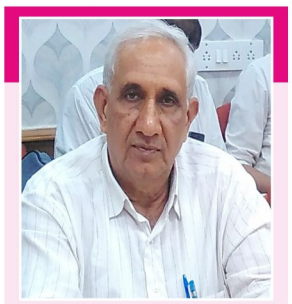

डॉ. वीरेन्द्र सिंह लाठर,
पूर्व प्रधान वैज्ञानिक,
आई.सी.ए.आर.–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली
(मो. 94168–01607)

एल. लागत पर घोषित एम.एस.पी. पर करके, किसानों का 40 हज़ार करोड़ रुपए से ज्यादा शोषण किया, जिसके दुष्प्रभाव से दुनियाभर में सर्वोत्तम कृषि उत्पादकता लेने वाले हरियाणा-पंजाब के किसान गरीब और कर्जबन्द बनते रहे और आत्महत्या करने पर भी मज़बूर हैं। इन्हीं आर्थिक शोषण से बचने के लिए, किसान एम.एस.पी. कानूनी गारंटी की मांग के लिए अन्दोलन कर रहे हैं।

भारत 1 जनवरी, 1995 को विश्व व्यापार संगठन का सदस्य बना, जिसका मुख्य उद्देश्य दुनियाभर में मुक्त व्यापार को बढ़ावा देना है। इस मुक्त व्यापार के लिए अन्तर्राष्ट्रीय दबाव के कारण ही, राष्ट्रीय हितों के विरुद्ध सरकार देश में कृषि विपणन का वैश्विकरण करने के लिए वर्ष 2020 में निरस्त तीन कृषि कानून लाई थी, जिनका मुख्य उद्देश्य किसान हितैषी सरकारी कृषि उपज मंडी सिस्टम, समर्थन मूल्य पॉलिसी आदि व्यवस्था को समाप्त करके, देश में कार्पोरेट खेती और कृषि विपणन व्यवस्था को बढ़ावा देना था। लेकिन इन किसान विरोधी कानूनों के खिलाफ देशव्यापी किसान आन्दोलन और चुनाव-2024 की राजनीतिक मज़बूरी की वजह से, सरकार को इन कृषि कानूनों को निरस्त करना पड़ा था।

अब उसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए सरकार 25 नवम्बर, 2024 को निरस्त कृषि कानूनों को नये रूप में एग्रीकल्चर मार्केटिंग पॉलिसी ड्राफ्ट के तौर पर लेकर आई है, जिसमें निजी थोक मंडियों की स्थापना, प्रसंस्करणकर्ताओं, निर्यातकों, संगठित खुदरा विक्रेताओं, थोक खरीददारों द्वारा थोक प्रत्यक्ष खरीद की अनुमति देना व गोदामों/साइलो/शीतगृहों को मान्य बाज़ार-यार्ड घोषित करना और निजी ई-ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म की स्थापना और संचालन की अनुमति देना व गोदामों/साइलो/शीतगृहों को मान्य बाज़ार-यार्ड घोषित करना और निजी ई-ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म की स्थापना और संचालन की अनुमति देना आदि बहुत प्रावधान ऐसे रखे गए हैं, जिनके कारण मौजूदा सरकारी कृषि उपज मंडी सिस्टम, समर्थन मूल्य पॉलिसी आदि व्यवस्था का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। बिना सरकारी निगरानी के मार्केटिंग के कई चैनल खोलने से शोषण और धोखाधड़ी का खतरा बढ़ सकता है। ड्राफ्ट पॉलिसी फ्रेमवर्क में कृषि बाज़ारों के रेगुलेशन का कोई जिक्र नही है। न ही अनरेगुलेटेड थोक बाज़ार और प्राइवेट थोक बाज़ारों से जुड़ी समस्याओं को हल करने का प्रस्ताव है। लेकिन निजी बाज़ारों या अनियमित बाज़ारों को अतार्किक ढंग से बढ़ावा दिया गया है।

वैश्विकरण के अन्तर्राष्ट्रीय बचाव में, मौजूदा सरकार किसान-कृषि और उपभोक्ता को कार्पोरेट खेती और मुक्त व्यापार कृषि विपणन व्यवस्था के अमेरिकी व पश्चिमी देशों के मॉडल के हवाले करना चाहती है, जिसमें किसान और उपभोक्ता दोनों का खुला शोषण होगा और देश की खाद्य सुरक्षा भी खतरे में पड़ेगी, क्योंकि मुक्त व्यापार विपणन व्यवस्था में कार्पोरेट कम्पनियां किसान से सस्ते दाम पर खाद्य पदार्थ खरीद कर, अपने गोदामों में भण्डारण करेगी और मुनाफा बढ़ाने के लिए मनमाने दाम पर दुनिया भर में कहीं भी अपना सामान बेच सकेगी। आज़ादी से पहले इसी तरह की एक कम्पनी की मुनाफाखोरी के कारण, भारत बंगाल अकाल जैसी त्रासदी देख चुका है, जिसमें कम्पनी के गोदाम चावल से भरे होने के बावजूद, 30 लाख लोग अनाज नहीं मिलने से भूख से मर गए थे।

कृषि विपणन में मुक्त व्यापार और वैश्विकरण को बढ़ावा देने के नाम पर, प्रस्तावित एग्रीकल्चर मार्केटिंग पॉलिसी ड्राफ्ट का किसान संगठनों के साथ-साथ कृषि उपज मंडियों के आढ़ती व व्यापार मंडल और कृषि में उन्नत पंजाब जैसी राज्य सरकारें भी विरोध कर रही हैं, क्योंकि यह मार्केटिंग पॉलिसी किसान और कृषि उपज मंडी सिस्टम, समर्थन मूल्य पॉलिसी के लिए काल साबित होगी।

न्यूनतम समर्थन मूल्य (एम.एस.पी.) की कानूनी गारंटी किसानों की प्रमुख लंबित मांग है, लेकिन सरकार के पॉलिसी ड्राफ्ट में इसे पूरी तरह नजर-अंदाज किया गया है। एक बड़ी खामी यह भी है कि इसमें अंतरराष्ट्रीय व्यापार नीतियों और प्रतिबद्धताओं का कोई जिक्र नहीं है। केन्द्र सरकार द्वारा इस किसान विरोधी मार्केटिंग पॉलिसी को लागू करने की बार-बार कोशिश, संविधान में दिए गए राज्यों के कृषि विपणन अधिकारी को छिनने का गम्भीर षड्यंत्र है। क्योंकि संविधान के अनुच्छेद 246 के अन्तर्गत सातवीं अनुसूची की सूची-II (राज्य सूची) की प्रविष्टि 28 में कृषि विपणन राज्य का विषय है। अत: केन्द्र सरकार द्वारा इस कृषि विपणन मार्केटिंग पॉलिसी को राज्य सरकारों, किसानों, राज्यों की कृषि उपज मंडियों पर थोपना सवैधानिक प्रावधानों का खुला उल्लंघन है।

खेती दुनिया

द्वारा

किसान भाईयों व डीलर/डिस्ट्रीब्यूटरों के लिए

चंदों में विशेष छूट

एक वर्ष 500/- रुपए

दो वर्ष 800/- रुपए

पेमेंट करने के पश्चात् अपना डाक पता इस नंबर पर भेजें :

90410-14575

KHETI DUNIYAN
TID - 62763351

चंदे भेजने हेतु QR कोड सकैन करें।